

Chapter एक कलियुग के पतित वंश

श्रीमद्भागवत का बारहवाँ स्कन्ध श्रील शुकदेव गोस्वामी की इस भविष्यवाणी से प्रारम्भ होता है कि कलियुग में आगे चल कर इस पृथ्वी पर कौन-कौन से राजे उत्पन्न होंगे। तत्पश्चात् वे इस युग के अनेक दोष गिनाते हैं जिसके बाद पृथ्वी की अधिष्ठात्री देवी उन मूर्ख राजाओं का व्यंग्यपूर्वक निरादर करती है, जो लगातार उसको जीतने का प्रयास करते रहते हैं। तत्पश्चात् शुकदेव गोस्वामी भौतिक प्रलय की चार कोटियाँ बतलाते हैं और अन्त में महाराज परीक्षित को अपनी सलाह देते हैं। इसके पश्चात् राजा परीक्षित को तक्षक सर्प डस लेता है, जिससे वे इस जगत से प्रयाण कर जाते हैं। सूत गोस्वामी नैमिषारण्य में मुनियों को वेदों तथा पुराणों की विविध शाखाओं के आचार्यों का नाम गिनाकर, मार्कण्डेय ऋषि का पवित्र इतिहास बताकर, भगवान् के विराट रूप की तथा सूर्य देव के रूप में उनके अंश की महिमा का गायन करके, इस ग्रंथ में विवेचित कथाओं का सारांश देकर तथा अन्तिम वर तथा स्तुतियाँ प्रदान करके, श्रीमद्भागवत का वाचन बन्द कर देते हैं।

इस स्कन्ध के प्रथम अध्याय में मगध राजवंश के भावी राजाओं का कलियुग के प्रभाव से भ्रष्ट होने का संक्षिप्त वर्णन मिलता है। सूर्य देव के वंश में पुरु के कुल में बीस राजाओं ने राज्य किया जिनमें उपरिचर वसु से प्रारम्भ करके पुरञ्जय तक सारे नाम गिनाये गये हैं। पुरञ्जय के बाद इस वंश की परम्परा भ्रष्ट हो जायेगी। पुरञ्जय के बाद पाँच राजा होंगे जो प्रद्योतन कहलायेंगे जिनके बाद शिशुनाग, मौर्य, शुंग, काण्व, अन्ध राष्ट्र के तीस राजा, सात आभीर, दस गर्दभी, सोलह कंक, आठ यवन, चौदह तुरुष्क, दस गुरुण्ड, ११ मौल, ५ किलकिला एकछत्र राजा तथा १३ बाह्लीक होंगे। इसके बाद विभिन्न राज्यों में एक ही समय पर ७ अंध राजा, ७ कौशल, विदूर राजा तथा निषध राज्य करेंगे। तत्पश्चात् मगध राज्यों की बागडोर ऐसे राजाओं के हाथों चली जायेगी जो शूद्र तथा म्लेच्छ जैसे होंगे और पूर्णतः अधर्म में निमग्न रहेंगे।

श्रीशुक उवाच

योऽन्त्यः पुरञ्जयो नाम भविष्यो बारहद्रथः ।

तस्यामात्यस्तु शुनको हत्वा स्वामिनमात्मजम् ॥ १ ॥

प्रद्योतसंज्ञं राजानं कर्ता यत्पालकः सुतः ।

विशाखयूपस्तत्पुत्रो भविता राजकस्ततः ॥ २ ॥

शब्दार्थ

श्री शुकः उवाच—श्री शुकदेव गोस्वामी ने कहा; यः—जो; अन्त्यः—(नवे स्कन्ध में वर्णित) अन्तिम सदस्य; पुरञ्जयः—पुरञ्जय (रिपुञ्जय); नाम—नामक; भविष्यः—भविष्य में होगा; बारहद्रथः—बृहद्रथ का वंशज; तस्य—उसका; अमात्यः—मंत्री; तु—लेकिन; शुनकः—शुनक; हत्वा—मार कर; स्वामिनम्—अपने स्वामी को; आत्म-जम्—अपने पुत्र; प्रद्योत-संज्ञम्—प्रद्योत नाम वाले को; राजानम्—राजा को; कर्ता—बनायेगा; यत्—जिसका; पालकः—पालक नामक;

सुतः—पुत्र; विशाखयूपः—विशाखयूप; तत्-पुत्रः—पालक का पुत्र; भविता—होगा; राजकः—राजक; ततः—तत्पश्चात् (विशाखयूप के पुत्र-रूप में)।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : हमने इसके पूर्व मागध वंश के जिन भावी शासकों के नाम गिनाये उनमें अन्तिम राजा पुरञ्जय था, जो बृहद्रथ के वंशज के रूप में जन्म लेगा। पुरञ्जय का मंत्री शुनक राजा की हत्या करके अपने पुत्र प्रद्योत को सिंहासनारूढ़ करेगा। प्रद्योत का पुत्र पालक होगा और उसका पुत्र विशाखयूप होगा जिसका पुत्र राजक होगा।

तात्पर्य : यहाँ पर छलछद्म से युक्त राजनीतिक दावपेंच का जो वर्णन है, वह कलियुग का लक्षण है। इस ग्रंथ के नवें स्कन्ध में शुकदेव गोस्वामी ने वर्णन किया है कि सूर्य तथा चन्द्र—इन दो राजवंशों में किस तरह महान् शासक अवतरित हुए। नवें स्कन्ध में ईश्वर के प्रसिद्ध अवतार भगवान् रामचन्द्र का वर्णन इसी वंशावली में आता है और नवें स्कन्ध के अन्त में शुकदेवजी भगवान् कृष्ण तथा बलराम के पूर्वजों का वर्णन करते हैं। अन्त में चन्द्रवंश के प्रसंग में कृष्ण तथा बलराम के आविर्भाव का उल्लेख हुआ है।

दशम स्कन्ध में भगवान् कृष्ण की बाल लीलाओं का वृन्दावन में, कौमार लीलाओं का मथुरा में और कैशोर लीलाओं का द्वारका में वर्णन हुआ है। सुप्रसिद्ध महाकाव्य *महाभारत* में भी इसी काल की घटनाओं का वर्णन हुआ है, जिसमें पाँचों पाण्डवों तथा कृष्ण एवं भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य एवं विदुर जैसे ऐतिहासिक महापुरुषों के कार्यकलापों पर ध्यान एकाग्र किया गया है। *महाभारत* में ही *भगवद्गीता* सन्निहित है, जिसमें भगवान् कृष्ण को परब्रह्म घोषित किया गया है। *श्रीमद्भागवत* को जिसके बारहवें तथा अन्तिम स्कन्ध का हम अब प्रस्तुत कर रहे हैं, *महाभारत* से उच्चतर ग्रंथ माना जाता है क्योंकि पूरे ग्रंथ में परम ब्रह्म, भगवान् श्रीकृष्ण, का मुख्य रूप से तथा निर्विवाद रूप से उद्घाटन हुआ है। वस्तुतः *भागवत* के प्रथम स्कन्ध में इसका वर्णन हुआ है कि श्री व्यासदेव ने इस महान् ग्रंथ की कैसे रचना की क्योंकि वे *महाभारत* में भगवान् श्रीकृष्ण के छुटपुट महिमा-गायन से असन्तुष्ट थे।

यद्यपि *श्रीमद्भागवत* में अनेक राजवंशों के इतिहासों तथा असंख्य राजाओं की जीवनीयों का वर्णन मिलता है, किन्तु कलियुग का वर्णन आने तक हमें कोई ऐसा मंत्री नहीं मिलता जो अपने ही राजा की हत्या करके अपने पुत्र को सिंहासनारूढ़ कर दे। यह घटना धृतराष्ट्र द्वारा पाण्डवों की हत्या के प्रयास और अपने पुत्र दुर्योधन को राज-मुकुट देने के ही समान है। जैसाकि *महाभारत* में बतलाया गया है, भगवान् कृष्ण ने इस प्रयास को विफल कर दिया किन्तु भगवान् के वैकुण्ठ प्रयाण के साथ ही कलियुग पूरी तरह से प्रकट हुआ और अपने ही घर में उसने राजनीतिक हत्या को आदर्श विधि के रूप में मान्यता दे डाली।

नन्दिवर्धनस्तत्पुत्रः पञ्च प्रद्योतना इमे ।

अष्टत्रिंशोत्तरशतं भोक्ष्यन्ति पृथिवीं नृपाः ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

नन्दिवर्धनः—नन्दिवर्धन; तत्-पुत्रः—उसका पुत्र; पञ्च—पाँच; प्रद्योतनाः—प्रद्योतन; इमे—ये; अष्ट-त्रिंश—अड़तीस; उत्तर—अधिक; शतम्—एक सौ; भोक्ष्यन्ति—भोग करेंगे; पृथिवीम्—पृथ्वी पर; नृपाः—राजा लोग।

राजक का पुत्र नन्दिवर्धन होगा और प्रद्योतन वंश में पाँच राजा होंगे जो १३८ वर्षों तक पृथ्वी का भोग करेंगे।

शिशुनागस्ततो भाव्यः काकवर्णस्तु तत्सुतः ।
क्षेमधर्मा तस्य सुतः क्षेत्रज्ञः क्षेमधर्मजः ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

शिशुनागः—शिशुनाग; ततः—तत्पश्चात्; भाव्यः—जन्म लेंगे; काकवर्णः—काकवर्ण; तु—तथा; तत्-सुतः—उसका पुत्र; क्षेमधर्मा—क्षेमधर्मा; तस्य—काकवर्ण का; सुतः—पुत्र; क्षेत्रज्ञः—क्षेत्रज्ञ; क्षेमधर्म-जः—क्षेमधर्मा से उत्पन्न।

नन्दिवर्धन के शिशुनाग नामक पुत्र होगा और उसका पुत्र काकवर्ण कहलायेगा। काकवर्ण का पुत्र क्षेमधर्मा होगा तथा क्षेमधर्मा का पुत्र क्षेत्रज्ञ होगा।

विधिसारः सुतस्तस्याजातशत्रुर्भविष्यति ।
दर्भकस्तत्सुतो भावी दर्भकस्याजयः स्मृतः ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

विधिसारः—विधिसार; सुतः—पुत्र; तस्य—क्षेत्रज्ञ का; अजातशत्रुः—अजातशत्रु; भविष्यति—होगा; दर्भकः—दर्भक; तत्-सुतः—अजातशत्रु का पुत्र; भावी—जन्म लेगा; दर्भकस्य—दर्भक का; अजयः—अजय; स्मृतः—स्मरण किया जाता है।

क्षेत्रज्ञ का पुत्र विधिसार होगा और उसका पुत्र अजातशत्रु होगा। अजातशत्रु के दर्भक नाम का पुत्र होगा और उसका पुत्र अजय होगा।

नन्दिवर्धन आजेयो महानन्दिः सुतस्ततः ।
शिशुनागा दशैवैते सष्ट्युत्तरशतत्रयम् ॥ ६ ॥
समा भोक्ष्यन्ति पृथिवीं कुरुश्रेष्ठ कलौ नृपाः ।
महानन्दिसुतो राजन्शूद्रागर्भोद्भवो बली ॥ ७ ॥
महापद्मपतिः कश्चिन्नन्दः क्षत्रविनाशकृत् ।
ततो नृपा भविष्यन्ति शूद्रप्रायास्त्वधार्मिकाः ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

नन्दिवर्धनः—नन्दिवर्धन; आजेयः—अजय का पुत्र; महा-नन्दिः—महानन्दि; सुतः—पुत्र; ततः—तत्पश्चात् (नन्दिवर्धन के बाद); शिशुनागाः—शिशुनाग; दश—दश; एव—निरसन्देह; एते—ये; सष्टि—साठ; उत्तर—अधिक; शत-त्रयम्—तीन सौ; समाः—वर्ष; भोक्ष्यन्ति—राज्य करेंगे; पृथिवीम्—पृथ्वी पर; कुरुश्रेष्ठ—हे कुरुओं में श्रेष्ठ; कलौ—इस कलियुग में; नृपाः—राजागण; महानन्दि-सुतः—महानन्दि का पुत्र; राजन्—हे राजा परीक्षित; शूद्रा-गर्भ—शूद्र स्त्री के गर्भ से; उद्भवः—जन्म लेकर; बली—बलवान; महा-पद्म—लाखों में गिनी जाने वाली सेना या सम्पत्ति; पतिः—स्वामी; कश्चित्—कोई; नन्दः—नन्द; क्षत्र—राजसी श्रेणी का; विनाश-कृत्—विनाशकर्ता; ततः—तब; नृपाः—राजागण; भविष्यन्ति—होंगे; शूद्र-प्रायाः—शूद्रों जैसे; तु—तथा; अधार्मिकाः—अधार्मिक।

अजय दूसरे नन्दिवर्धन का पिता बनेगा, जिसका पुत्र महानन्दि होगा। हे कुरुश्रेष्ठ, शिशुनाग वंश के ये दस राजा कलियुग में ३६० वर्षों तक राज्य करेंगे। हे परीक्षित, राजा महानन्दि की शूद्रा पत्नी के गर्भ से अत्यन्त शक्तिशाली पुत्र होगा जो नन्द कहलायेगा। वहलाखों सैनिकों तथा प्रभूत सम्पत्ति का स्वामी होगा। वह क्षत्रियों में कहर ढायेगा और उसके बाद के प्रायः सारे राजे अधार्मिक शूद्र होंगे।

तात्पर्य : यहाँ इसका वर्णन मिलता है कि विश्व में प्रामाणिक राजनीतिक सत्ता का कैसे हास हुआ और किस तरह वह छिन्न-भिन्न हुई। ईश्वर के साथ ही साथ शक्तिशाली सन्त पुरुष हैं जिन्होंने सरकारी नेताओं की भूमिका ग्रहण की थी और पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधित्व किया था। किन्तु कलियुग के आते ही यह दिव्य सरकारी प्रणाली बैठ गई और अनधिकारी, असभ्य लोगों ने धीरे धीरे शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली।

स एकच्छत्रां पृथिवीमनुल्लङ्घितशासनः ।

शासिष्यति महापद्मो द्वितीय इव भार्गवः ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

सः—वह (नन्द); एक-छत्राम्—एक नायकत्व के अधीन; पृथिवीम्—सम्पूर्ण पृथ्वी; अनुल्लङ्घित—जिसका उल्लंघन न किया जा सके; शासनः—शासन; शासिष्यति—प्रभुसत्ता होगी; महापद्मः—महापद्म का स्वामी; द्वितीयः—दूसरा; इव—मानो; भार्गवः—परशुराम।

महापद्म का स्वामी, राजा नन्द, सारी पृथ्वी पर इस तरह शासन करेगा मानो द्वितीय परशुराम हो और उसकी सत्ता को कोई चुनौती नहीं दे सकेगा।

तात्पर्य : इस अध्याय के आठवें श्लोक में इसका उल्लेख हुआ है कि राजा नन्द क्षत्रिय वंश के बचेखुचे लोगों को नष्ट करेगा। इसलिए उसकी उपमा परशुराम से दी गई है, जिसने पिछले युग में क्षत्रियों को २१ बार ध्वंस किया था।

तस्य चाष्टौ भविष्यन्ति सुमाल्यप्रमुखाः सुताः ।

य इमां भोक्ष्यन्ति महीं राजानश्च शतं समाः ॥ १० ॥

शब्दार्थ

तस्य—उसके (नन्द के); च—तथा; अष्टौ—आठ; भविष्यन्ति—जन्म लेंगे; सुमाल्य-प्रमुखाः—सुमाल्य इत्यादि; सुताः—पुत्र; ये—जो; इमाम्—इस; भोक्ष्यन्ति—भोग करेंगे; महीम्—पृथ्वी पर; राजानः—राजा; च—तथा; शतम्—एक सौ; समाः—वर्ष।

उसके सुमाल्य आदि आठ पुत्र होंगे जो पृथ्वी को एक सौ वर्षों तक शक्तिशाली राजाओं के रूप में अपने वश में रखेंगे।

नव नन्दान्द्विजः कश्चित्प्रपन्नानुद्धरिष्यति ।

तेषां अभावे जगतीं मौर्या भोक्ष्यन्ति वै कलौ ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

नव—नौ; नन्दान्—नन्दों (नन्द तथा उसके आठ पुत्रों); द्विजः—ब्राह्मण; कश्चित्—कोई; प्रपन्नान्—विश्वास करते हुए; उद्धरिष्यति—उन्मूलन करेगा; तेषाम्—उनकी; अभावे—अनुपस्थिति में; जगतीम्—पृथ्वी; मौर्याः—मौर्य वंश; भोक्ष्यन्ति—शासन करेगा; वै—निस्सन्देह; कलौ—इस कलियुग में।

कोई एक ब्राह्मण (चाणक्य) राजा नन्द तथा उसके आठ पुत्रों के साथ विश्वासघात करेगा और उनके वंश का विनाश कर देगा। उनके न रहने पर कलियुग में मौर्यगण विश्व पर शासन करेंगे।

तात्पर्य : श्रीधर स्वामी तथा विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर दोनों ही पुष्टि करते हैं कि यहाँ पर उल्लिखित ब्राह्मण चाणक्य है, जिसका दूसरा नाम कौटिल्य या वात्स्यायन है। श्रीमद्भागवत की यह महान् ऐतिहासिक कथा जो विराट जगत के प्राकट्य के पूर्व की घटनाओं से प्रारम्भ होती है, अब आधुनिक प्रलेखित इतिहास के क्षेत्र में प्रवेश करती है। आधुनिक इतिहासकार मौर्य वंश को तथा चन्द्रगुप्त को जिस राजा का निम्नलिखित श्लोक में वर्णन किया गया है, दोनों को, मान्यता प्रदान करते हैं।

स एव चन्द्रगुप्तं वै द्विजो राज्येऽभिषेक्ष्यति ।

तत्सुतो वारिसारस्तु ततश्चाशोकवर्धनः ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

सः—वह (चाणक्य); एव—निस्सन्देह; चन्द्रगुप्तम्—राजकुमार चन्द्रगुप्त को; वै—निस्सन्देह; द्विजः—ब्राह्मण; राज्ये—राज्य में; अभिषेक्ष्यति—अभिषिक्त होगा; तत्—चन्द्रगुप्त का; सुतः—पुत्र; वारिसारः—वारिसार; तु—तथा; ततः—वारिसार के बाद; च—तथा; अशोकवर्धनः—अशोकवर्धन।

यह ब्राह्मण चन्द्रगुप्त को सिंहासन पर बैठायेगा जिसका पुत्र वारिसार होगा। वारिसार का पुत्र अशोकवर्धन होगा।

सुयशा भविता तस्य सङ्गतः सुयशःसुतः ।

शालिशूकस्ततस्तस्य सोमशर्मा भविष्यति ।

शतधन्वा ततस्तस्य भविता तद्बृहद्रथः ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

सुयशाः—सुयशा; भविता—उत्पन्न होगा; तस्य—उसके (अशोकवर्धन के); सङ्गतः—संगत; सुयशः—सुतः—सुयशा का पुत्र; शालिशूकः—शालिशूक; ततः—तत्पश्चात्; तस्य—उस (शालिशूक) के; सोमशर्मा—सोमशर्मा; भविष्यति—होगा; शतधन्वा—शतधन्वा; ततः—तत्पश्चात्; तस्य—उस (सोमशर्मा) के; भविता—होगा; तत्—उस (शतधन्वा) के; बृहद्रथः—बृहद्रथ।

अशोकवर्धन के बाद सुयशा होगा जिसका पुत्र संगत होगा। इसका पुत्र शालिशूक होगा जिसका पुत्र सोमशर्मा होगा। सोमशर्मा का पुत्र शतधन्वा होगा और इसका पुत्र बृहद्रथ कहलायेगा।

मौर्या ह्येते दश नृपाः सप्तत्रिंशच्छतोत्तरम् ।
समा भोक्ष्यन्ति पृथिवीं कलौ कुरुकुलोद्धह ॥ १४ ॥

शब्दार्थ

मौर्याः—मौर्यगण; हि—निस्सन्देह; एते—ये; दश—दस; नृपाः—राजा; सप्त-त्रिंशत्—सैतीस; शत—एक सौ; उत्तरम्—अधिक; समाः—वर्ष; भोक्ष्यन्ति—शासन करेंगे; पृथिवीम्—पृथ्वी पर; कलौ—कलियुग में; कुरु-कुल—कुरुवंश के; उद्धह—हे विख्यात वीर ।

हे कुरुश्रेष्ठ, ये दस मौर्य राजा कलियुग के १३७ वर्षों तक पृथ्वी पर राज्य करेंगे ।
तात्पर्य : यद्यपि नौ राजाओं के नाम लिये गये हैं, किन्तु संगत के राज्य के पूर्व सुज्येष्ठ के बाद दशरथ हुआ । इस तरह कुल दस मौर्य राजा थे ।

अग्निमित्रस्ततस्तस्मात्सुज्येष्ठो भविता ततः ।
वसुमित्रो भद्रकश्च पुलिन्दो भविता सुतः ॥ १५ ॥
ततो घोषः सुतस्तस्माद्वज्रमित्रो भविष्यति ।
ततो भागवतस्तस्माद्देवभूतिः कुरुद्धह ॥ १६ ॥
शुङ्गा दशैते भोक्ष्यन्ति भूमिं वर्षशताधिकम् ।
ततः काण्वानियं भूमिर्यास्यत्यल्पगुणानृप ॥ १७ ॥

शब्दार्थ

अग्निमित्रः—अग्निमित्र; ततः—पुष्प मित्र से, वह सेनापति जो बृहद्रथ का वध करेगा; तस्मात्—उस (अग्निमित्र) से;
सुज्येष्ठः—सुज्येष्ठ; भविता—होगा; ततः—उससे; वसुमित्रः—वसुमित्र; भद्रकः—भद्रक; च—तथा; पुलिन्दः—पुलिन्द;
भविता—होगा; सुतः—पुत्र; ततः—उस (पुलिन्द) से; घोषः—घोष; सुतः—पुत्र; तस्मात्—उससे; वज्रमित्रः—वज्रमित्र;
भविष्यति—होगा; ततः—उससे; भागवतः—भागवत; तस्मात्—उससे; देवभूति—देवभूति; कुरु-उद्धह—हे कुरुश्रेष्ठ;
शुङ्गाः—शुंग; दश—दस; एते—ये; भोक्ष्यन्ति—भोग करेंगे; भूमिम्—पृथ्वी का; वर्ष—वर्ष; शत—एक सौ;
अधिकम्—अधिक; ततः—तब; काण्वान्—काण्व वंश; इयम्—यह; भूमिः—पृथ्वी; यास्यति—के राज्य में आ जायेगी;
अल्प-गुणान्—बहुत कम गुणों वाले; नृप—हे राजा परीक्षित ।

हे राजा परीक्षित, इसके बाद अग्निमित्र राजा बनेगा, तब सुज्येष्ठ बनेगा । सुज्येष्ठ के बाद वसुमित्र, भद्रक तथा भद्रक का पुत्र पुलिन्द होंगे । इसके बाद पुलिन्द का पुत्र घोष शासन करेगा जिसके बाद वज्रमित्र, भागवत तथा देवभूति होंगे । इस तरह हे कुरुश्रेष्ठ, दस शुंग राजा पृथ्वी पर एक सौ वर्षों से अधिक तक राज्य करेंगे । तब यह पृथ्वी काण्व वंश के राजाओं के अधीन हो जायेगी जिनमें बहुत ही कम गुण होंगे ।

तात्पर्य : श्रील श्रीधर स्वामी के अनुसार शुंग वंश तब प्रारम्भ हुआ जब सेनापति पुष्पमित्र ने अपने ही राजा बृहद्रथ का वध कर डाला और सत्ता स्वयं हथिया ली । पुष्पमित्र के बाद अग्निमित्र तथा शुंग वंश के अन्य राजा हुए जिन्होंने ११२ वर्षों तक राज्य किया ।

शुङ्गं हत्वा देवभूतिं काण्वोऽमात्यस्तु कामिनम् ।
स्वयं करिष्यते राज्यं वसुदेवो महामतिः ॥ १८ ॥

शब्दार्थ

शुद्धम्—शुंग को; हत्वा—मार कर; देवभूतिम्—देवभूति; काण्वः—काण्व वंश का सदस्य; अमात्यः—उसका मंत्री; तु—लेकिन; कामिनम्—कामी; स्वयम्—स्वयं; करिष्यते—करेगा; राज्यम्—राज्य; वसुदेवः—वसुदेव नामक; महामतिः—अत्यन्त बुद्धिमान।

काण्व वंश से सम्बद्ध एक बुद्धिमान मंत्री वसुदेव, शुंग राजाओं में से देवभूति नामक अत्यन्त विलासी अन्तिम राजा को मारेगा और स्वयं शासन सँभालेगा।

तात्पर्य : स्पष्ट है कि चूँकि राजा देवभूति अन्य पुरुषों की स्त्रियों के पीछे दीवाना रहता (लम्पट) था इसलिए उसके मंत्री ने उसको मार डाला और सत्ता हथिया ली। इस प्रकार काण्व वंश का सूत्रपात हुआ।

तस्य पुत्रस्तु भूमित्रस्तस्य नारायणः सुतः ।

काण्वायना इमे भूमिं चत्वारिंशच्च पञ्च च ।

शतानि त्रीणि भोक्ष्यन्ति वर्षाणां च कलौ युगे ॥ १९ ॥

शब्दार्थ

तस्य—उस (वसुदेव) का; पुत्रः—पुत्र; तु—तथा; भूमित्रः—भूमित्र; तस्य—उसका; नारायणः—नारायण; सुतः—पुत्र; काण्व-अयनाः—काण्व वंश के राजा; इमे—ये; भूमिम्—पृथ्वी; चत्वारिंशत्—चालीस; च—तथा; पञ्च—पाँच; च—तथा; शतानि—सौ; त्रीणि—तीन; भोक्ष्यन्ति—शासन करेंगे; वर्षाणाम्—वर्ष; च—तथा; कलौ युगे—कलियुग में।

वसुदेव का पुत्र भूमित्र होगा और उसका पुत्र नारायण होगा। काण्व वंश के ये राजा पृथ्वी पर कलियुग के अगले ३४५ वर्षों तक शासन चलायेंगे।

हत्वा काण्वं सुशर्माणं तद्भृत्यो वृषलो बली ।

गां भोक्ष्यत्यन्धजातीयः कञ्चित्कालमसत्तमः ॥ २० ॥

शब्दार्थ

हत्वा—मार कर; काण्वम्—काण्व राजा को; सुशर्माणम्—सुशर्मा नामक; तत्-भृत्यः—उसका नौकर; वृषलः—निम्न जाति का शूद्र; बली—बली नामक; गाम्—पृथ्वी पर; भोक्ष्यति—शासन करेगा; अन्ध-जातीयः—अन्ध जाति का; कञ्चित्—कुछ; कालम्—समय तक; असत्तमः—अत्यन्त भ्रष्ट।

काण्वों का अन्तिम राजा सुशर्मा, अन्ध जाति के अधम शूद्र बली नामक अपने ही नौकर के हाथों मारा जायेगा। यह अत्यन्त भ्रष्ट महाराज बली कुछ काल तक पृथ्वी पर शासन करेगा।

तात्पर्य : यहाँ पर अधिक जानकारी यह मिलती है कि किस तरह सरकारी प्रशासन में असंस्कृत लोग प्रविष्ट हो चुके थे। बली नामक तथाकथित राजा को असत्तम अर्थात् नितान्त अपवित्र, असभ्य व्यक्ति कहा गया है।

कृष्णनामाथ तद्भ्राता भविता पृथिवीपतिः ।

श्रीशान्तकर्णस्तत्पुत्रः पौर्णमासस्तु तत्सुतः ॥ २१ ॥

लम्बोदरस्तु तत्पुत्रस्तस्माच्चिबिलको नृपः ।
 मेघस्वातिश्चिबिलकादटमानस्तु तस्य च ॥ २२ ॥
 अनिष्टकर्मा हालेयस्तलकस्तस्य चात्मजः ।
 पुरीषभीरुस्तत्पुत्रस्ततो राजा सुनन्दनः ॥ २३ ॥
 चकोरो बहवो यत्र शिवस्वातिररिन्दमः ।
 तस्यापि गोमती पुत्रः पुरीमान्भविता ततः ॥ २४ ॥
 मेदशिराः शिवस्कन्दो यज्ञश्रीस्तत्सुतस्ततः ।
 विजयस्तत्सुतो भाव्यश्चन्द्रविज्ञः सलोमधिः ॥ २५ ॥
 एते त्रिंशन्नृपतयश्चत्वार्यब्दशतानि च ।
 षट्पञ्चाशच्च पृथिवीं भोक्ष्यन्ति कुरुनन्दन ॥ २६ ॥

शब्दार्थ

कृष्ण-नाम—कृष्ण नामक; अथ—तब; तत्—उस (बली) का; भ्राता—भाई; भविता—होगा; पृथिवी-पति:—पृथ्वी का स्वामी; श्री-शान्तकर्णः—श्री शान्तकर्ण; तत्—कृष्ण का; पुत्रः—पुत्र; पौर्णमासः—पौर्णमास; तु—तथा; तत्-सुतः—उसका पुत्र; लम्बोदरः—लम्बोदर; तु—तथा; तत्-पुत्रः—उसका पुत्र; तस्मात्—उस (लम्बोदर) से; चिबिलकः—चिबिलक; नृपः—राजा; मेघस्वातिः—मेघस्वाति; चिबिलकात्—चिबिलक से; अटमानः—अटमान; तु—तथा; तस्य—उस (मेघस्वाति) का; च—तथा; अनिष्टकर्मा—अनिष्टकर्मा; हालेयः—हालेय; तलकः—तलक; तस्य—उस (हालेय) का; च—तथा; आत्म-जः—पुत्र; पुरीषभीरुः—पुरीषभीरु; तत्—तलक का; पुत्रः—पुत्र; ततः—तब; राजा—राजा; सुनन्दनः—सुनन्दन; चकोरः—चकोर; बहवः—बहुगण; यत्र—जिनमें से; शिवस्वातिः—शिवस्वाति; अरिन्दमः—शत्रुओं का दमन करने वाला; तस्य—उसके; अपि—भी; गोमती—गोमती; पुत्रः—पुत्र; पुरीमान्—पुरीमान; भविता—होगा; ततः—उस (गोमती) से; मेदशिराः—मेदशिरा; शिवस्कन्दः—शिवस्कन्द; यज्ञश्रीः—यज्ञश्री; तत्—शिवस्कन्द का; सुतः—पुत्र; ततः—तब; विजयः—विजय; तत्-सुतः—उसका पुत्र; भाव्यः—होगा; चन्द्रविज्ञः—चन्द्रविज्ञ; स-लोमधिः—लोमधि सहित; एते—ये; त्रिंशत्—तीस; नृ-पतयः—राजा; चत्वारि—चार; अब्द-शतानि—शताब्दियों; च—तथा; षट्-पञ्चासत्—छप्पन; च—तथा; पृथिवीम्—पृथ्वी पर; भोक्ष्यन्ति—शासन करेंगे; कुरु-नन्दन—हे कुरुओं के प्रिय पुत्र ।

बली का भाई, कृष्ण, पृथ्वी का अगला शासक बनेगा। उसका पुत्र शान्तकरण होगा और शान्तकरण का पुत्र पौर्णमास होगा। पौर्णमास का पुत्र लम्बोदर होगा जिसका पुत्र महाराज चिबिलक होगा। चिबिलक से मेघस्वाति उत्पन्न होगा जिसका पुत्र अटमान होगा। अटमान का पुत्र अनिष्टकर्मा होगा। उसका पुत्र हालेय होगा जिसका पुत्र तलक होगा। तलक का पुत्र पुरीषभीरु होगा और उसके बाद सुनन्दन राजा बनेगा। सुनन्दन के बाद चकोर तथा आठ बहुगण होंगे जिनमें से शिवस्वाति शत्रुओं का महान् दमनकर्ता होगा। शिवस्वाति का पुत्र गोमती होगा जिसका पुत्र पुरीमान होगा। पुरीमान का पुत्र मेदशिरा होगा। उसका पुत्र शिवस्कन्द होगा जिसका पुत्र यज्ञश्री होगा। यज्ञश्री का पुत्र विजय होगा जिसके दो पुत्र होंगे—चन्द्रविज्ञ तथा लोमधि। हे कुरुओं के प्रिय पुत्र, ये तीस राजा पृथ्वी पर कुल ४५६ वर्षों तक अपनी प्रभुसत्ता बनाये रखेंगे।

सप्ताभीरा आवभृत्या दश गर्दभिनो नृपाः ।

कङ्काः षोडश भूपाला भविष्यन्त्यतिलोलुपाः ॥ २७ ॥

शब्दार्थ

सप्त—सात; आभीराः—आभीर; आवभृत्याः—अवभृति नगरी के; दश—दस; गर्दभिनः—गर्दभी; नृपाः—राजा;
कङ्काः—कंक; षोडश—सोलह; भू-पालाः—पृथ्वी के शासक; भविष्यन्ति—होंगे; अति-लोलुपाः—अत्यन्त लालची ।

तत्पश्चात् अवभृति नगरी की आभीर जाति के सात राजा होंगे और तब दस गर्दभी होंगे ।
उनके बाद कंक के सोलह राजा शासन करेंगे और वे अपने अत्यधिक लोभ के लिए
विख्यात होंगे ।

ततोऽष्टौ यवना भाव्याश्चतुर्दश तुरुष्ककाः ।

भूयो दश गुरुण्डाश्च मौला एकादशैव तु ॥ २८ ॥

शब्दार्थ

ततः—तत्पश्चात्; अष्टौ—आठ; यवनाः—यवनगण; भाव्याः—होंगे; चतुः-दश—चौदह; तुरुष्ककाः—तुरुष्क; भूयः—
इसके भी आगे; दश—दस; गुरुण्डाः—गुरुण्ड; च—तथा; मौलाः—मौल; एकादश—ग्यारह; एव—निस्सन्देह; तु—
तथा ।

तब आठ यवन शासन सँभालेंगे जिनके बाद चौदह तुरुष्क, दस गुरुण्ड तथा ग्यारह
मौल वंश के राजा होंगे ।

एते भोक्ष्यन्ति पृथिवीं दश वर्षशतानि च ।

नवाधिकां च नवतिं मौला एकादश क्षितिम् ॥ २९ ॥

भोक्ष्यन्त्यब्दशतान्यङ्ग त्रीणि तैः संस्थिते ततः ।

किलकिलायां नृपतयो भूतनन्दोऽथ वङ्गिरिः ॥ ३० ॥

शिशुनन्दिश्च तद्भ्राता यशोनन्दिः प्रवीरकः ।

इत्येते वै वर्षशतं भविष्यन्त्यधिकानि षट् ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ

एते—ये; भोक्ष्यन्ति—शासन करेंगे; पृथिवीम्—पृथ्वी पर; दश—दस; वर्ष-शतानि—शताब्दी; च—तथा; नव-
अधिकाम्—और नौ; च—तथा; नवतिम्—नब्बे; मौलाः—मौल; एकादश—ग्यारह; क्षितिम्—संसार पर; भोक्ष्यन्ति—
शासन करेंगे; अब्द-शतानि—शताब्दी; अङ्ग—हे परीक्षित; त्रीणि—तीन; तैः—उनके द्वारा; संस्थिते—सबों के मृत होने
पर; ततः—तब; किलकिलायाम्—किलकिला नगरी में; नृ-पतयः—राजागण; भूतनन्दः—भूतनन्द; अथ—और तब;
वङ्गिरिः—वंगिरि; शिशुनन्दिः—शिशुनन्दि; च—तथा; तत्—उसका; भ्राता—भाई; यशोनन्दिः—यशोनन्दि; प्रवीरकः—
प्रवीरक; इति—इस प्रकार; एते—ये; वै—निस्सन्देह; वर्ष-शतम्—एक सौ वर्ष; भविष्यन्ति—होंगे; अधिकानि—अधिक,
और; षट्—छः ।

ये आभीर, गर्दभी तथा कंक १०९९ वर्षों तक पृथ्वी का भोग करेंगे और मौलगण ३००
वर्षों तक राज्य करेंगे । इन सबों के दिवंगत होने पर किलकिला नगरी में भूतनन्द, वंगिरि,
शिशुनन्दि, उसका भाई यशोनन्दि तथा प्रवीरक नामक राजाओं का वंश उदय होगा ।

किलकिला के ये राजा कुल मिलाकर १०६ वर्षों तक प्रभुत्व जमाये रखेंगे ।

तेषां त्रयोदश सुता भवितारश्च बाह्लिकाः ।

पुष्पमित्रोऽथ राजन्यो दुर्मित्रोऽस्य तथैव च ॥ ३२ ॥

एककाला इमे भूपाः सप्तान्धाः सप्त कौशलाः ।

विदूरपतयो भाव्या निषधास्तत एव हि ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ

तेषाम्—उनके (भूतनन्द तथा किलकिला वंश के अन्य राजाओं के); त्रयोदश—तेरह; सुताः—पुत्र; भवितारः—होंगे; च—तथा; बाह्लिकाः—बाह्लिक; पुष्पमित्रः—पुष्पमित्र; अथ—तब; राजन्यः—राजा; दुर्मित्रः—दुर्मित्र; अस्य—उसका (पुत्र); तथा—भी; एव—निस्सन्देह; च—तथा; एक-कालाः—एक ही समय शासन कर रहे; इमे—ये; भू-पाः—राजा; सप्त—सात; अन्धाः—अन्ध; सप्त—सात; कौशलाः—कौशल देश के राजा; विदूर-पतयः—विदूर के शासक; भाव्याः—होंगे; निषधाः—निषध; ततः—तब (बाह्लिकों के बाद); एव हि—निस्सन्देह ।

किलकिलाओं के बाद उनके तेरह पुत्र, बाह्लिक होंगे और उनके बाद राजा पुष्पमित्र, उसका पुत्र दुर्मित्र, सात अन्ध, सात कौशल तथा विदूर और निषध प्रान्तों के राजा भी एक ही समय विश्व के अलग-अलग भागों में शासन करेंगे ।

मागधानां तु भविता विश्वस्फूर्जिः पुरञ्जयः ।

करिष्यत्यपरो वर्णान्पुलिन्दयदुमद्रकान् ॥ ३४ ॥

शब्दार्थ

मागधानाम्—मगध प्रान्त के; तु—तथा; भविता—होंगे; विश्वस्फूर्जिः—विश्वस्फूर्जि; पुरञ्जयः—राजा पुरञ्जय; करिष्यति—बनायेगा; अपरः—दूसरे; वर्णान्—सारे सभ्य मनुष्य; पुलिन्द-यदु-मद्रकान्—पुलिन्द, यदु तथा मद्रक जैसे अछूतों में ।

तब मागधों का राजा विश्वस्फूर्जि प्रकट होगा जो दूसरे पुरञ्जय के समान होगा । वह समस्त सभ्य वर्णों को निम्न श्रेणी के असभ्य मनुष्यों में बदल देगा, जिस तरह पुलिन्द, यदु तथा मद्रक होते हैं ।

प्रजाश्चाब्रह्मभूयिष्ठाः स्थापयिष्यति दुर्मतिः ।

वीर्यवान्क्षत्रमुत्साद्य पद्मवत्यां स वै पुरि ।

अनुगङ्गमाप्रयागं गुप्तां भोक्ष्यति मेदिनीम् ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ

प्रजाः—नागरिक; च—तथा; अब्रह्म—जो ब्राह्मण नहीं है; भूयिष्ठाः—मुख्य रूप से; स्थापयिष्यति—बनायेगा; दुर्मतिः—मूर्ख (विश्वस्फूर्जि); वीर्य-वन्—शक्तिशाली; क्षत्रम्—क्षत्रिय जाति; उत्साद्य—विनष्ट करके; पद्मवत्याम्—पद्मवती में; सः—वह; वै—निस्सन्देह; पुरि—नगरी में; अनु-गङ्गम्—गंगा द्वारा (हरद्वार) से; आ-प्रयागम्—प्रयाग तक; गुप्ताम्—सुरक्षित; भोक्ष्यति—शासन करेगा; मेदिनीम्—पृथ्वी पर ।

मूर्ख राजा विश्वस्फूर्जि सारे नागरिकों को नास्तिकता की ओर ले जाएगा और अपनी शक्ति का उपयोग क्षत्रिय जाति को पूर्णतया ध्वंस करने में करेगा । वह अपनी राजधानी

पद्मवती में गंगा के उद्गम से लेकर प्रयाग तक शासन करेगा ।

सौराष्ट्रावन्त्याभीराश्च शूरा अर्बुदमालवाः ।

व्रात्या द्विजा भविष्यन्ति शूद्रप्राया जनाधिपाः ॥ ३६ ॥

शब्दार्थ

शौराष्ट्र—सौराष्ट्र; अवन्ती—अवन्ती; आभीराः—तथा आभीर में निवास करने वाले; च—तथा; शूराः—शूर प्रान्त में रहने वाले; अर्बुद-मालवाः—अर्बुद तथा मालव में रहने वाले; व्रात्याः—सारे संस्कारों से विपथ; द्विजाः—ब्राह्मण; भविष्यन्ति—होंगे; शूद्र-प्रायाः—शूद्रों जैसे ही; जन-अधिपाः—राजागण ।

उस काल में सौराष्ट्र, अवन्ती, आभीर, शूर, अर्बुद तथा मालव प्रान्तों के ब्राह्मण अपने सारे विधि-विधान भूल जायेंगे और इन स्थानों के राजवंशों के सदस्य शूद्रों जैसे ही होंगे ।

सिन्धोस्तटं चन्द्रभागां कौन्तीं काश्मीरमण्डलम् ।

भोक्ष्यन्ति शूद्रा व्रात्याद्या म्लेच्छाश्चाब्रह्मवर्चसः ॥ ३७ ॥

शब्दार्थ

सिन्धोः—सिन्धु नदी के; तटम्—तट पर; चन्द्रभागाम्—चन्द्रभागा; कौन्तीम्—कौन्ती; काश्मीर-मण्डलम्—काश्मीर का क्षेत्र; भोक्ष्यन्ति—शासन करेगा; शूद्राः—शूद्रजन; व्रात्य-आद्याः—ब्राह्मण-पद से च्युत ब्राह्मण तथा दूसरे अयोग्य पुरुष; म्लेच्छाः—मांसभक्षक; च—तथा; अब्रह्म-वर्चसः—आध्यात्मिक शक्ति से रहित ।

सिन्धु नदी का तटवर्ती भाग तथा चन्द्रभागा, कौन्ती एवं काश्मीर के जनपद शूद्रों, पतित ब्राह्मणों और मांसाहारियों के द्वारा शासित होंगे । वे वैदिक सभ्यता के मार्ग को त्याग कर समस्त आध्यात्मिक शक्ति खो चुकेंगे ।

तुल्यकाला इमे राजन्म्लेच्छप्रायाश्च भूभृतः ।

एतेऽधर्मानृतपराः फल्गुदास्तीव्रमन्यवः ॥ ३८ ॥

शब्दार्थ

तुल्य-कालाः—एक ही समय शासन कर रहे; इमे—ये; राजन्—हे राजा परीक्षित; म्लेच्छ-प्रायाः—अछूतों जैसे ही; च—तथा; भू-भृतः—राजागण; एते—ये; अधर्म—अधर्म; अनृत—तथा असत्य के प्रति; पराः—समर्पित; फल्गु-दाः—अपनी प्रजा को नाममात्र का लाभ देने वाले; तीव्र—भयानक; मन्यवः—उनका क्रोध ।

हे राजा परीक्षित, एक ही समय शासन करने वाले ऐसे अनेक असभ्य राजा होंगे और वे सब के सब दान न देने वाले, अत्यन्त क्रोधी तथा अधर्म और असत्य के महान् भक्त होंगे ।

स्त्रीबालगोद्विजघ्नाश्च परदारधनादृताः ।

उदितास्तमितप्राया अल्पसत्त्वाल्पकायुषः ॥ ३९ ॥

असंस्कृताः क्रियाहीना रजसा तमसावृताः ।

प्रजास्ते भक्षयिष्यन्ति म्लेच्छा राजन्यरूपिणः ॥ ४० ॥

शब्दार्थ

स्त्री—स्त्रियों; बाल—बालकों; गो—गौवों; द्विज—तथा ब्राह्मणों के; घ्नाः—हत्यारे; च—तथा; पर—अन्य मनुष्यों के; दार—स्त्रियाँ; धन—तथा धन; आदताः—रुचि लेते हुए; उदित-अस्त-मित—बढ़ते तथा घटते स्वभाव वाले; प्रायाः—अधिकांशतः; अल्प-सत्त्व—थोड़े बल वाले; अल्पक-आयुषः—अल्पायु वाले; असंस्कृताः—वैदिक अनुष्ठानों से शुद्ध नहीं हुए; क्रिया-हीनाः—विधि-विधानों से रहित; रजसा—रजोगुण से; तमसा—तथा तमोगुण से; आवृताः—ढके; प्रजाः—नागरिक; ते—वे; भक्षयिष्यन्ति—निगल जायेंगे; म्लेच्छाः—अछूत; राजन्य-रूपिणः—राजा के रूप में।

ये बर्बर लोग राजा के वेश में निर्दोष स्त्रियों, बच्चों, गौवों तथा ब्राह्मणों की हत्या करके तथा अन्य पुरुषों की पत्नियों को लुभाकर तथा सम्पत्ति को लूट करके सारी प्रजा का भक्षण कर जायेंगे। उनका स्वभाव अनियमित होगा, उनमें चरित्र बल नहीं के बराबर होगा तथा वे अल्पायु होंगे। निस्सन्देह, किसी वैदिक अनुष्ठान से शुद्ध न होने तथा विधि-विधानों के अभाव में, वे रजो तथा तमोगुणों से पूरी तरह प्रच्छन्न होंगे।

तात्पर्य : ये श्लोक इस युग के पतित नेताओं का संक्षिप्त किन्तु यथातथ्य विवरण प्रस्तुत करते हैं।

तन्नाथास्ते जनपदास्तच्छीलाचारवादिनः ।

अन्योन्यतो राजभिश्च क्षयं यास्यन्ति पीडिताः ॥ ४१ ॥

शब्दार्थ

तत्-नाथाः—इन राजाओं को शासक रूप में पाने वाली प्रजा; ते—वे; जन-पदाः—नगरों के वासी; तत्—इन राजाओं के; शील—चरित्र; आचार—आचरण; वादिनः—तथा वाणी; अन्योन्यतः—परस्पर; राजभिः—राजाओं द्वारा; च—तथा; क्षयम् यास्यन्ति—विनष्ट हो जायेंगे; पीडिताः—सताये हुए।

इन निम्न जाति के राजाओं द्वारा शासित प्रजा अपने शासकों के चरित्र, आचरण तथा वाणी का अनुकरण करेगी। वे लोग अपने अपने नायकों से तथा एक-दूसरे से सताये जाकर विनष्ट हो जायेंगे।

तात्पर्य : श्रीमद्भागवत के नवम स्कन्ध के अन्त में यह कहा गया है कि इस अध्याय में वर्णित सर्वप्रथम राजा, रिपुञ्जय या पुरञ्जय, का शासन भगवान् कृष्ण के समय से लगभग १,००० वर्ष बाद समाप्त हुआ था। चूँकि भगवान् कृष्ण लगभग ५,००० वर्ष पहले प्रकट हुए थे अतएव पुरञ्जय लगभग ४,००० वर्ष पूर्व हुआ होगा। इसका अर्थ यह हुआ कि अंतिम राजा विश्वस्फूर्जि ईसा की बारहवीं सदी में हुआ होगा।

आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों ने यह झूठा आरोप लगा रखा है कि भारत के धार्मिक साहित्य में तिथिवार इतिहास नहीं है। किन्तु इस अध्याय में वर्णित विस्तृत ऐतिहासिक तिथिक्रम इस झूठे आरोप का खण्डन करता है।

इस तरह श्रीमद्भागवत के बारहवें स्कंध के अन्तर्गत “कलियुग के पतित वंश” नामक प्रथम अध्याय के श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद के विनीत सेवकों द्वारा रचित तात्पर्य पूर्ण हुए।